(पूर्वभव कथा)

क्षमावतार भगवान पार्श्वनाथ

कमठ और मरुभूति

बहुत प्राचीनकाल की बात है, पोतनपुर में अरविंद नाम का राजा था। राजा का पुरोहित था विश्वभूति।

विश्वभूति राजनीति और धर्मनीति का विद्वान् था। संतोषी, दयालु और सरल स्वभाव का था। एक दिन संध्या के समय विश्वभूति अपनी गृहवाटिका में बैठा था। आकाश में बादल छाये थे। बादलों के बीच इन्द्रधनुष बना देखा। विश्वभूति बहुत देर तक इन्द्रधनुष के बनते-मिटते रंगों को देखता रहा। सोचने लगा–'इन्द्रधनुष की तरह ही मनुष्य का जीवन है। हर क्षण इसके रंग बदलते रहते हैं। कभी सुख, कभी दुःख, कभी खुशी, कभी गम ! जीवन कितना अस्थिर है। अगले क्षण क्या होगा कुछ भी पता नहीं।'

फिर वह अपने जीवन के सम्बन्ध में सोचता है–'मैं वृद्ध हो चुका हूँ। कब तक शासन और गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ ढोता रहूँगा। क्यों न इनसे मुक्त होकर एकान्त–शान्त जीवन बिताता हुआ साधना करूँ।'

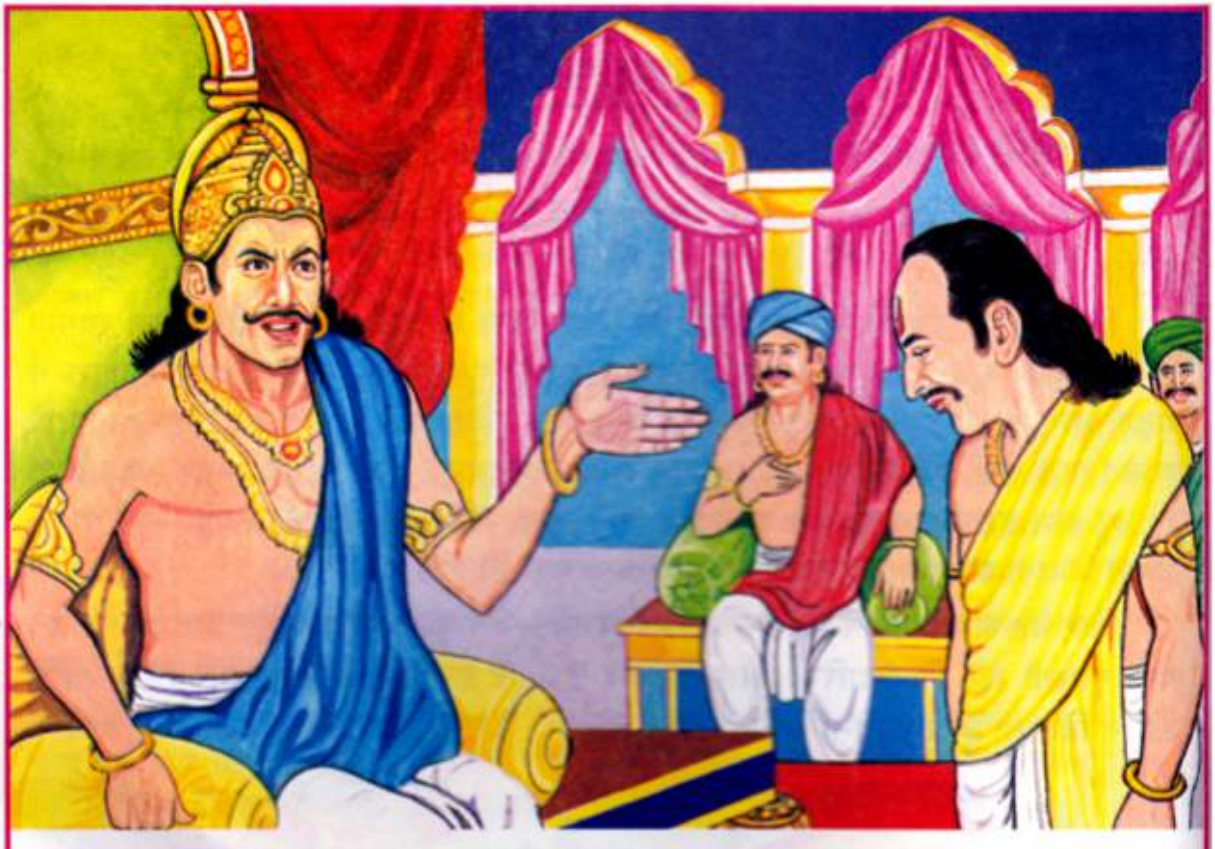

विश्वभूति उठा। उसने अपनी पत्नी व दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा—"मैं अब तप-जप, ध्यान-साधना करके एकान्त जीवन जीना चाहता हूँ। परिवार की सब जिम्मेदारी तुम सँभालो।"

राजा की आज्ञा लेकर विश्वभूति मुनि बनकर आत्म-साधना करने लगा।

राजा ने विश्वभूति के बड़े पुत्र कमठ से कहा—"अपने पिता का राजपुरोहित पद अब तुम्हें सँभालना है।"

कमठ अहंकारी और दुराचारी स्वभाव का था। राजपुरोहित बनकर तो सब जगह अपनी मनमानी करने लगा। छोटा भाई मरुभूति बड़ा संतोषी और तपस्वी स्वभाव का था। हर समय मन्दिर व उपाश्रय में जाकर पूजा, उपासना और स्वाध्याय करता रहता था।

एक दिन नगर के प्रजाजनों ने राजा से शिकायत की—"महाराज ! हमने देखा है, राजपुरोहित कमठ रात के समय अड्डों पर जाकर जुआ खेलता है, शराब पीता है और दुराचार सेवन करता है।"

राजा ने कमठ को चेतावनी दी—"तू राजपुरोहित और ब्राह्मण होकर ऐसे कुकर्म करता है ? आज पहली बार का अपराध तो मैं क्षमा करता हूँ। भविष्य में दुबारा ऐसी शिकायत मिली तो कठोर दण्ड दिया जायेगा।"

लेकिन कमठ अपनी आदतों से बाज नहीं आया। एक दिन उसने घर पर ही छककर शराब पी ली। शराब के नशे में पागल हुआ वह अपने छोटे भाई की पत्नी वसुंधरा के कक्ष में चला गया–"वसुंधरे ! देख मैं तेरे लिये क्या लाया हूँ ?" उसने एक सोने का हार उसके गले में डालकर उसका हाथ पकड़ लिया।

वसुंधरा घबराई–"जेठ जी ! आप यह क्या पाप कर रहे हैं ? मैं आपके छोटे भाई की पत्नी हूँ। आपकी पुत्री के समान।"

नशे में चूर कमठ ने कहा–"सुन्दरी ! तेरा पति तो नपुंसक है। इसलिए वह मन्दिर में पड़ा रहता है। अब तू मेरे साथ जीवन का आनन्द लूट ले।" और उसने एक सोने का कंगन उसके हाथों में पहना दिया।

वसुंधरा प्रलोभनों में फँस गई। अब कमठ बिना किसी डर, भय के पाप-लीला रचाने लगा।

कमठ की पत्नी ने यह सब देखा तो उसने वसुंधरा को फटकारा–"नीच ! पापिनी ! पिता तुल्य जेठ के साथ यह पापाचार करती है ? तेरे शरीर में कीड़े पड़ जायेंगे।"